(Gautamiputra Satkarani) (72-95)

Q. Examine the career and achievements of Gautamiputra Satka...

Part I HOD
D. I
Answer –

गौतमीपुत्र सातकर्णि की जीवनी एवं उपलब्धि

आधी शताब्दी के विदेशी आक्रमणों और विदेशी शासन के बाद सातवाहनों के प्राचीन गौरव और शक्ति का पुनरुद्धार करने का श्रेय गौतमीपुत्र श्री सातकर्णि को है। यह सातवाहन वंश का सबसे अधिक प्रतापी और यशस्वी राजा है। सौभाग्यवश इसके वीरता पूर्ण कार्यों का उल्लेख और साम्राज्य के विस्तार का काव्यमय वर्णन इसकी माता बालश्री के नासिक गुहालेख में मिलता है। इसमें ~~माता~~ बालश्री ने अपने यशस्वी वीरपुत्र के कार्यों का बड़ा ओजस्वी वर्णन किया है। उसकी माता ने अपने पोते वाशिष्ठ पुत्र पुलमावी के राज्यकाल में नासिक में त्रिरश्मि (तिरहज) पर्वत में एक गुहा भद्रायणीय सम्प्रदाय के बौद्ध भिक्षुओं को दान की थी। इस दान के सम्बन्ध में उसका लेख इस गुहा में खुदा हुआ है यह इस बात को सूचित करता है कि गौतमी बालश्री ने अपने आरम्भिक जीवन में महान राष्ट्र की भूमि को विदेशी म्लेच्छों द्वारा रौंदे जाते हुए देखा था, उसके बेटे ने इसे स्वाधीन कर इसके गौरव को पुनः प्रतिष्ठित किया था अतः इस लेख में उस वीर प्रसविनी देवी का सच्चा आत्माभिमान अत्यन्त संयत शब्दों में प्रकट हुआ है। उसके शब्दों में वह वस्तुतः सातवाहनों कुल के यश का प्रतिष्ठापक...

गौतमीपुत्र ने अपने राज्य के पहले 16 वर्ष चुपचाप अपने प्रबल शत्रु क्षहरात वंश के उन्मूलन के लिए आवश्यक सैनिक तैयारी में लगाये। पूर्ण रूप से सुसज्जित होने के बाद 17 वर्ष में उसने अपनी सत्ता को दक्षिणी प्रदेश में सुदृढ़ बनाने के लिए जोगलथम्बी (पूनाजिले) में लड़ाई लड़ी। अगले वर्ष दक्षिणी महाराष्ट्र में अपनी शक्ति सुदृढ़ बनायी। इस प्रकार अपना आधार मजबूत बनाने के बाद उसने उत्तरी

प्रदेशों की ओर ध्यान दिया। उषवदात (ऋषभदत्त)
और नहपान के साथ भीषण संघर्ष करते हुए उन्हें
पराभूत किया एवं मार डाला। इस प्रकार
क्षहरात वंश का उन्मूलन किया। इस घटना का वर्णन
एक जैन ग्रंथ आवश्यक सूत्र की टीका (निर्युक्ति)
में मिलता है। इसके अनुसार नहपान की राजधानी
भरुकच्छ थी। उसने प्रचुर धन का संग्रह किया था।
प्रतिष्ठान में शासन करने वाले उसके शत्रु सात-
वाहन नरेश ने नहपान के विरुद्ध एक बड़ी
शक्तिशाली सेना एकत्र की। भरुकच्छ पर चढ़ाई
की किन्तु दो वर्ष तक इसका घेरा डालने
के बाद भी वह नहपान को हराने में समर्थ
नहीं हुआ। अतः उसने कूटनीति का आश्रय लिया।
नहपान के एक मंत्री द्वारा उसे यह प्रेरणा दिल-
वाई कि वह पुण्य प्राप्ति के लिए अपने विशाल
कोष का उदारतापूर्वक दान कर दे। इस प्रकार दान
करते करते जब नहपान का कोष खाली हो गया तो
शत्रु ने उस पर आक्रमण कर दिया। इस बार
बड़ी सरलता से भरुकच्छ पर अधिकार करके
राजा को पूर्णरूप से विध्वंस कर दिया गया। नह-
पान लड़ते हुए मारा गया और सातवाहनों
को अभूतपूर्व सफलता मिली। वालश्री के नासिक
प्रशस्ति में गौतमीपुत्र को शकों यवनों और पह्लवों
का संहार करने वाला बताया गया है।

गौतमीपुत्र के इस प्रकार अपनी महान विजयों
से एक नवीन सातवाहन साम्राज्य का निर्माण किया।
वालश्री के उपर्युक्त प्रशस्ति के अनुसार सातवाहन
वंश के निम्नलिखित पुराने प्रदेश इसमें सम्मिलित
थे। आकर (पूर्वी मालवा) अवंति, पश्चिमी मालवा
अनूप (नर्मदा नदी की घाटी) विदर्भ (बरार) आसिक-
असक मूलक (उत्तरी महाराष्ट्र) तथा अपरांत (उत्तरी
कोंकण) इसके अतिरिक्त उसने क्षत्रपों को कुकर
(पश्चिमी राजपूताना और सुरत (सौराष्ट्र के प्रांत दिये

Scanned with CamScanner

यह सम्भव है कि उसने कुकुर और अवंति के मध्यवर्ती
आर्न्त, श्वभ्र (साबरमती का प्रदेश) और मरु प्रांत भी
आर्न्त जीते होंगे। गौतमीपुत्र निम्नलिखित पर्वत मालाओं
श्वभ्र पर भी प्रभुत्व रखता था। विन्ध्य (विन्ध्य पर्वत
मरुप्रांत का पूर्वी भाग) अच्छवत अथवा सतपुड़ा के पहाड़
विन्ध्य- पारीयात्र परियात्र अथवा विंध्य पर्वतमाला का
अच्छवत पश्चिमी भाग और अरावली की पर्वत माला
सह्य (पश्चिमी घाट) कण्हगिरि (कन्हेरी) मध्य भाग
मलय (पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग) महेंद्र (
(महेन्द्र अर्थात महानदी और गोदावरी के बीच के
पूर्वी घाट) सेटगिरि (श्रीगिरि) चकोर (पूर्वी घाट
का दक्षिणी हिस्सा) चकोर और महेन्द्र पर्वत
पर गौतमीपुत्र का आधिपत्य यह सूचित करता
है कि उस समय कलिंग और आंध्र (कृष्णा गोदा
की जिले) उसके साम्राज्य में सम्मिलित थे।

गौतमी पुत्र न केवल एक शूरवीर सेनानी
था अपितु दानवीरता में भी उसने अपने प्रतिद्वन्दी
क्षत्रपों को मात देने का प्रयास किया। उसने वलरु
गुहाओं में रहने वाले भिक्षुओं को उषवदात
द्वारा दिये गये गाँवों का पुनर्दान किया। इसी प्रकार
नासिक में तेकिरसी के भिक्षुओं को उषवदात की
भाँति गुहाओं और जमीनों का दान किया।
शक राजा सभी सम्प्रदायों के भिक्षुओं को दान दिया करते थे
किन्तु गौतमी पुत्र ने कार्ले के महासांघिकों को
और नासिक के भद्रायणीय धर्म के प्रति उसकी
निष्ठा एक ब्राह्मण अथवा ब्राह्मण धर्म के कट्टर
उपासक के विशेषण से सूचित होती है।

गौतमीपुत्र ने प्रशासन के महत्वपूर्ण
कार्यों की ओर भी पूरा ध्यान दिया। गोवर्धन
जिले (नासिक) में उसने बेनाकटक नामक नवीन
नगर का निर्माण किया। महाक्षत्रप नहपान की
मुद्राओं को पुनः अपनी मुद्रा के चिह्न से अंकित
करवाया। राजराज और महाराज की उपाधियाँ

Scanned with CamScanner

धारण की। इससे पहले मौर्य सम्राट अशोक ने अपने लेखों में अपने को केवल राजा कहा है। अब सातवाहनों ने राजराज और महाराज तथा दक्षिणापथ के स्वामी की उपाधियाँ धारण की। महाराज और राज-राज की उपाधियाँ पहले ईरान में हखामनी सम्राटों तथा बाद में प्राविधिक राजा मिथ्रदात ने धारण की थी। शकों ने ईरानियों के सम्पर्क से इन उपाधियों को ग्रहण किया। अब शकों की देखा देखी सातवाहन राजा भी इनका प्रयोग करने लगे।

गौतमीपुत्र प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य का सदा ध्यान रखता था वह अपने प्रजाजनों के दुःख में दुखी और सुख में सुखी मानने वाला (पौरजन-निविसेस-सम-दुख-सुखम) राजा था। प्रजा पर वह केवल ऐसे ही कर लगाता था जो धर्मशास्त्रानुमोदित थे। अपराध करने वाले शत्रुओं के प्रति भी वह कठोर व्यवहार नहीं करता था उनकी जान लेने का प्रयत्न नहीं करता था। अद्वितीय धनुर्धारी राम, केशव, अर्जुन और भीमसेन के तुल्य पराक्रम के कार्य करने वाला तथा ययाति राम और अम्बरीष के समान तेजस्वी था। उसने चातुर्वर्ण्य का संकर रोका था। वह अपने शत्रुओं को हराने में पटु था, उसने क्षत्रियों के दर्प और मान का मर्दन किया था। उसके घोड़े ने तीनों समुद्रों का पानी पिया था (त्रिसमुद्रतोयपीतवाहन) अर्थात उसका शासन अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिन्दू महासागर तक फैला हुआ था। बाण ने भी एक सातवाहन राजा को त्रिसमुद्राधिपति लिखा है।

गौतमीपुत्र सातवाहनों राजाओं में ऐसा पहला राजा था है जिसके साथ हमें मातृपरक नाम Metronym का प्रयोग मिलता है। सातवाहन राजाओं में तीन वैदिक ऋषियों, वशिष्ठ, माठर, और गौतम के आधार पर तीन मातृपरक नाम, वाशिष्ठीपुत्र

माठरिपुत्र और गौतमीपुत्र मिलते हैं इनमें गौतमी, वाशि
ष्ठी और माठरि में मातृपरक नामों के आधार पर
राजाओं का परिचय दिया गया है। मातृपरक नामों
की यह प्रथा नागार्जुनी कोण्डा और जग्गैयापेट के
इक्ष्वाकु राजाओं के नामों में भी मिलती है।
मालवा प्रदेश में साँची स्तूप अभिलेखों तथा
भरहुत के एक अभिलेख में वाशिष्ठीपुत्र, गार्गी-
पुत्र वात्सीपुत्र के नाम पाये जाते हैं। बेसनगर के
अभिलेख में राजा भागभद्र को कोत्सीपुत्र कहा
गया है। सातवाहनों ने ऐसे मातृ परक नाम क्स
समय क्यों धारण किये इसकी कोई संतोषज-
नक व्याख्या अभी तक नहीं हो सकी है।

बालश्री के नासिक प्रशस्ति में अपने
पुत्र के रूप का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया है।
वह पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान कांति से युक्त और
प्रियदर्शन था। नागराजा के फण जैसी मोटी भुजाओं
विपुल दीर्घ भुजाओं वाला था, निरन्तर दान देते रहने
के कारण उसके हाथ सदा गीले रहते थे और
वह अपनी माता की सेवा शुश्रुषा करने वाला था।
श्री काशीप्रसाद जायसवाल तथा कुछ अन्य विद्वान ने यह
माना है कि गौतमी पुत्र और भारतीय इतिहास में प्र-
सिद्ध राजा विक्रमादित्य एक ही व्यक्ति है। वह वही
राजा था जिसने 57 ई० पू० में शकों का संहार किया
करके उज्जैन को स्वाधीन बनाया किया था। काल-
काचार्य के कथानक के अनुसार यह राजा विक्रमा-
दित्य था तथा प्रतिष्ठान से आया था। प्रतिष्ठान
उस समय सातवाहनों की राजधानी थी। यह भी उल्लेख-
नीय है कि अनुश्रुति की गाथाओं में विक्रमादित्य
का राज्यकाल 55 वर्ष दिया गया है। और पुराणों
की वंशावली में दूसरे सातकर्णी का राज्यकाल
भी लगभग यही अर्थात 56 वर्ष है। गौतमी-
पुत्र के एक विशेषण वर-वारणविक्रम चारु-विक्रम
(उत्तम हाथी के समान सुन्दर चाल वाले) में विक्रम

Scanned with CamSc

शब्द के दो बार प्रयोग को विक्रमादित्य का संकेत माना है।
श्री जायसवाल ने विक्रमादित्य विषयक अनुश्रुतियों का गौतमीपुत्र सातकर्णी विषयक अनुश्रुतियों का गौतमीपुत्र सातकर्णी विषयक अनुश्रुतियों के साथ सामंजस्य करते हुए यह कहा है कि वह जन्म से ही राजा माना जाने लगा था। किन्तु उसका राज्याभिषेक २६ वर्ष की आयु में हुआ। उस समय उसकी माता गौतमी बालश्री राजकाज देखती थी, अभिषेक के 18वें वर्ष उसने शकों को हराकर उज्जयिनी को जीता। भारतवर्ष के इतिहास में यह एक स्मरणीय घटना थी। इसी समय से विक्रमसम्वत् का आरम्भ हुआ

श्री दिनेश चन्द्र सरकार ने उपर्युक्त कल्पना का खंडन कई प्रबल युक्तियों के आधार पर किया है पहली युक्ति सातवाहन राजाओं द्वारा विक्रमसम्वत् का प्रयोग न करने की है। यदि गौतमीपुत्र ही विक्रमादित्य था और उसने 57 ई० पू० के शकों का संहार करके विक्रम सम्वत् का प्रवर्तन किया था तो उसने स्वमेव तथा उसके उत्तराधिकारियों ने इस सम्वत् का प्रयोग क्यों नहीं किया। ये सभी राजा अपने अभिलेखों में राज्यकाल के वर्षों का ही उल्लेख करते हैं, विक्रमसम्वत् का कोई निर्देश नहीं करते है। दूसरी युक्ति दोनों राजाओं की अनुश्रुतियां उसका सम्बन्ध उज्जयिनी से जोड़ती है और गौतमीपुत्र सातकर्णी की अनुश्रुतियां उसे प्रतिष्ठान का राजा बताती है। दोनों में इतना अधिक अंतर है कि इनका समन्वय किसी प्रकार नहीं किया जा सकता है। तीसरी युक्ति गौतमीपुत्र द्वारा विक्रमादित्य की उपाधियां धारण न करना है। उसके अभिलेखों में उसकी अनेक उपाधियों का वर्णन है किन्तु यह उपाधि कहीं नहीं मिलती। अतः गौतमीपुत्र और विक्रमादित्य सर्वथा भिन्न व्यक्ति थे इन दोनों का एकीकरण युक्ति युक्त नहीं प्रतीत होता है।